संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रों की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 11 ■ अंक : 67 ■ मार्च 2025

भारतीय भाषाओं की सखी है हिंदी : प्रो. दुबे

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के हैदराबाद केंद्र द्वारा महाराष्ट्र राज्य के चंद्रपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए दि.17.03.2025 से 29.03.2025 तक आयोजित 481वें नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, विशिष्ट अतिथि के रूप में हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद के पूर्व समकुलपति तथा केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के शासी परिषद सदस्य प्रो. आर.एस. सर्राजु, पाठ्यक्रम संयोजक क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे, पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक तथा अतिथि अध्यापक डॉ. दीपेश व्यास मंच पर उपस्थित थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. सुरेंद्र दुबे ने प्रतिभागी अध्यापकों को संबोधित करते हुए कहा कि आजादी के 75 वर्ष बाद भी अंग्रेजी सभी भारतीय भाषाओं को खत्म करती जा रही है। भाषाओं का आपस में कोई बैर नहीं है। सभी भारतीय भाषाएँ हिंदी की सहेली हैं लेकिन अंग्रेजियत के कारण सब आपस में लड़ते हैं। नई शिक्षा नीति में तीन भाषाओं को पढ़ने व पढ़ाने की जो नई शुरूवात हुई है उससे सभी क्षेत्रीय भाषाएँ समृद्ध एवं विस्तृत रूप से अपना अस्तित्व स्थापित कर पाएँगी। नई टेक्नोलॉजी पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक सीमा तक ही हमारा ज्ञानवर्धन कर सकती है। मूल भावनाओं को जानने के लिए हमें पुस्तकों का ही सहारा लेना पड़ेगा।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि प्रो. आर.एस. सर्राजु ने कहा कि भूमंडलीकरण के दौर में सबके साथ मिलकर सीखने की जरूरत है। सभी देशों के लोग सांस्कृतिक एवं भाषागत भिन्नता को छोड़ते हुए आपस में सामंजस्य बनाएँ तथा नए शोध एवं अध्ययन की विधियों का आदान-प्रदान करें।

मुख्य अतिथि निदेशक, प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने संबोधन में प्रशिक्षण के लिए आए हुए अध्यापकों से कहा कि वे यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त कर हिंदी प्रचारक के रूप में कार्य करते हुए अपने क्षेत्र के छात्र-छात्राओं को नए ढंग से पठन-पाठन करवाएँ तथा उनके ज्ञान में रोचक वृद्धि करें।

इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रो. गंगाधर वानोडे ने भाषाविज्ञान तथा उसके विविध पक्ष, डॉ. फत्ताराम नायक ने हिंदी व्याकरण तथा डॉ. दीपेश व्यास ने हिंदी साहित्य

शेष पृष्ठ 7 पर जारी...

"भारतीय भक्ति साहित्य के माध्यम से कौशल विकास"

भारत का भक्ति साहित्य एक बहुमूल्य निधि है। यह हिंदी आलोचना का भी सर्वाधिक चिंतनशील विषय क्षेत्र रहा है। इसकी व्यापक और सुदीर्घ लोकप्रियता ने आलोचकों को अपने भीतर मौजूद कालजयी मूल्यों और साहित्यिक तत्वों के अन्वेषण के लिए सदैव आमंत्रण दिया है। धर्म, भक्ति तथा साहित्य, संस्कृति, कला के रूपों में इस काल के साहित्य में कौशल विकास की अनंत संभावनाएं मौजूद हैं।

उक्त बातें केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी ने कही। मौका था नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग एवं पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग द्वारा दिनांक 21-22 मार्च 2025 को आयोजित 'भारतीय भक्ति साहित्य के माध्यम से कौशल विकास' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का। कार्यक्रम के दौरान अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए प्रो. कुलकर्णी ने बताया कि नई शिक्षा नीति 2020 के आलोक में केंद्रीय हिंदी संस्थान भाषा और साहित्य के माध्यम से कौशल विकास की दिशा में सार्थक प्रयास कर रहा है। उन्होंने भरोसा जताया कि जिस तरह संस्थान अपने स्थापना काल से ही भाषा विज्ञान और भाषा शिक्षण के लिए प्रसिद्ध रहा है उसी तरह आने वाले समय में संस्थान साहित्य के माध्यम से कौशल विकास के प्रमुख केंद्र के रूप में पहचान प्राप्त करेगा।

प्रो. कुलकर्णी ने कहा कि केंद्रीय हिंदी संस्थान कौशल विकास के लिए अनुकूल पाठ्यक्रम के साथ-साथ समावेशी प्रशिक्षण पद्धति पर भी गंभीरता से काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि मार्क्सवादियों ने पाठ्यक्रम में ऐसे विषयों को चुना था कि समाज को कैसे खण्डित किया जाए। इसलिए हमने सोचा कि सामाजिक समरसता को लेकर विषय का चयन किया जाए और साहित्य के माध्यम से कौशलों का विकास कैसे किया जाए इस पर चर्चा आवश्यक है।

संगोष्ठी का शुभारम्भ अध्यक्ष, हिंदी विभाग राजस्थान वि.वि. जयपुर, से प्रो. नंद किशोर पाण्डेय, आचार्य एवं चेयरमेन, कला संकाय महाराजा सयाजीराव वि.वि. वड़ोदरा (गुजरात), से प्रो. दीपेन्द्र जाड़ेजा, निदेशक कें. हिं.

शेष पृष्ठ 5 पर जारी...

"कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में शिक्षा"

अध्यापक शिक्षा विभाग' द्वारा दिनांक 25-26 मार्च, 2025 को "कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में शिक्षा" विषय पर संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. राजेंद्र कुमार अनायत, ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी, उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा एवं पूर्व कुलपति दीनबंधु छोटूराम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हरियाणा, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. के. श्रीनिवास, विभागाध्यक्ष, सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी एवं प्रोजेक्ट प्रबंधन इकाई, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली, बीज वक्ता के रूप में प्रो. अतुल एम. गौंसाई, कंप्यूटर विज्ञान विभाग, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट (गुजरात), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर तथा उपस्थित रहे।

संगोष्ठी के समन्वयक प्रो. चंद्रकांत कोठे, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग ने स्वागत वक्तव्य एवं अतिथियों का परिचय दिया तथा संगोष्ठी के विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरि शंकर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने संस्थान का परिचय देते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता को मानव ब्रेन का रिप्लेसमेंट कहा। संगोष्ठी संयोजक डॉ. अंकुश तुलसीराम औंधकर ने आधार-पत्र प्रस्तुत करते हुए संगोष्ठी के मुख्य विषय एवं उसके उप-विषयों को विस्तार रूप से बताया तत्पश्चात संस्थान के अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक हिंदी 'शैक्षिक उन्मेष' पत्रिका एवं 'भारतीय लोकाचार एवं ज्ञान प्रणाली' पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

मुख्य अतिथि प्रो. राजेंद्र कुमार अनायत ने अपने उद्बोधन में कहा कि मानव का मस्तिष्क अद्भुत गुणों से भरा हुआ है और इसी का परिणाम कृत्रिम बुद्धिमत्ता है। विशिष्ट अतिथि के प्रो. के. श्रीनिवास ने अपने वक्तव्य में कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को ईश्वर प्रदत्त प्राकृतिक बुद्धि के सहयोग के रूप में होना चाहिए, न कि रिप्लेसमेंट के रूप में। प्रो. अतुल एम. गौंसाई ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का हम सदुपयोग भी कर सकते हैं और दुरुपयोग भी। सत्र का संचालन डॉ. शिल्पी कुमारी (सह आचार्य) एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सरोज राय (सह आचार्य) ने किया।

छह सत्रों तथा विभिन्न समांतर सत्रों में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. चंद्रकांत कोठे ने की। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. अंजलि शर्मा ने संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए सभी को बधाई दी तथा आज के युग में ए.आई. की प्रासंगिकता को स्वीकारने का समर्थन भी किया। समापन सत्र के अंतर्गत स्वागत वक्तव्य एवं परिचय डॉ. सरोज राय ने दिया। संगोष्ठी के समग्र सत्रों का प्रतिवेदन डॉ. अंकुश तुलसीराम औंधकर ने प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी प्रतिक्रियाएँ डॉ. अदिति गौतम, महेन्द्र विश्वकर्मा ने व्यक्त की। सत्र का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. तस्मीना हुसैन ने किया। कार्यक्रम में अतिथि विद्वान, संस्थान के समस्त विभागाध्यक्ष, शैक्षिक सदस्य, अनुभाग अधिकारी एवं कर्मचारी तथा विद्यार्थीगण उपस्थित रहे। ❑

ईद समारोह

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में 'ईद-उल-फितर' मिलन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, कुलसचिव डॉ. अंकुश तुलसीराम औंधकर, अध्यापक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. चंद्रकांत कोठे, सांध्यकालीन विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. राजवीर सिंह तथा अध्यापक शिक्षा विभाग के सभी शिक्षकगण के साथ संस्थान के सभी छात्र उपस्थित थे। ईद कार्यक्रम का संचालन पारंगत द्वितीय वर्ष की छात्रा शाहीन बेगम ने किया तथा इरफाना यासमीन ने ईद का महत्व बताया। संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने सभी को ईद का महत्व बताते हुए इसे भाईचारे का प्रतीक बताया। ❑

सम्मानित

अध्यापक शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ प्रणीता मिश्रा को कालिंदी प्रकाशन एवं शोध संकल्प अंतरराष्ट्रीय शोध जर्नल की ओर से अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में शैक्षणिक उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया। ❑

दो दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा दिनांक 18-19 मार्च 2025 को सत्र 2024 25 के विद्यार्थियों के लिए दो दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।कार्यक्रम के पहले दिन रंगोली, हिंदी एकल गीत, हिंदी सामूहिक गीत, स्वदेशी सामूहिक गीत और एकल वादन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।प्रतियोगिताओं के निर्णायक मंडल के रूप में डॉक्टर शैलजा मिश्रा तथा पुंडरीकाक्ष देव पाठक उपस्थित रहे।कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के शैक्षिक समन्वयक प्रोफेसर हरिशंकर ने की।

प्रतियोगिताओं का संचालन डॉक्टर परमान सिंह तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर पुरुषोत्तम पाटील ने किया। कार्यक्रम के दूसरे दिन हिंदी एकल नृत्य, हिंदी सामूहिक नृत्य, विदेशी एकल नृत्य, विदेशी सामूहिक नृत्य तथा फैंसी ड्रेस की प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। निर्णायक मंडल के रूप में श्रीमती एकता जैन एवं डॉ रोशनी गिडवानी ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शैक्षिक समन्वयक प्रोफेसर हरिशंकर ने की कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर रेणु चौधरी ने किया जबकि स्वागत वक्तव्य डॉक्टर जोगिंदर सिंह मीणा ने दिया। अंत में सभी का धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर परमान सिंह ने किया। प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्न प्रकार है- रंगोली में चीन के हावंग प्रथम, कम्बोडिया के सिरेमाओ द्वितीय, कजाकिस्तान के नदेजा तृतीय रहे। हिंदी एकल गीत में श्रीलंका के नेतमी प्रथम, श्रीलंका के जनुडी द्वितीय, पौलेंड के अन्ना द्वितीय, श्रीलंका के दिनेत्रा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

हिंदी सामूहिक गीत में श्रीलंका के नदीक समूह, ईशानी, जनुदी समूह, दिनेत्रा समूह क्रमशः प्रथम द्वितीय एवं तृतीय रहे। स्वदेशी एकल गीत में श्रीलंका स्वर्णमाली प्रथम, श्रीलंका दिनेत्रा द्वितीय, कजाकिस्तान बीबीगुल तृतीय रही। स्वदेशी सामूहिक गीत में मंगेलिया लक्पा समूह में प्रथम, श्रीलंका दिनेत्रा समूह में द्वितीय, श्रीलंका नदीक समूह में तृतीय रहे। एकल वादन प्रतियोगिता में श्रीलंका जनूदी में प्रथम, श्रीलंका शशिनि में द्वितीय, थाईलैंड सकोलथॉन में तृतीय रहे। हिंदी सामूहिक नृत्य में सभी पुरस्कार श्रीलंका के विद्यार्थियों ने प्राप्त किया। हिंदी एकल नृत्य में मंगोलिया के ओर्होन प्रथम, श्रीलंका के अंजानी द्वितीय, श्रीलंका नेत्मी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

एकल नृत्य स्वदेशी में श्रीलंका अंजानी ने प्रथम, मंगोलिया ओर्होन ने द्वितीय, श्रीलंका मानुषी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। स्वदेशी सामूहिक नृत्य में श्रीलंका अंजानी समूह ने प्रथम, ताजिकिस्तान मनीजा समूह ने तृतीय, श्रीलंका स्वर्णमाली समूह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

फैंसी ड्रैस (सामूहिक) में श्रीलंका चमाली समूह ने प्रथम, उज्बेकिस्तान नोदिरा समूह ने द्वितीय, मिश्र तस्नीम समूह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। फैंसी ड्रैस (एकल) में तुर्कमेनिस्तान ऐनेगुल ने प्रथम, जापान ननामि ने द्वितीय, कम्बोडिया सिरेमाओ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। ❑

विदेशी छात्रों ने खेली होली

अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग तथा अध्यापक शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वाधान में होली पर्व के उपलक्ष्य में रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विदेशी विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया। होली के इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम छात्र-छात्राओं द्वारा गीत तथा नृत्य प्रस्तुत किए गए। तदोपरांत सभी विद्यार्थियों को गुजिया तथा नमकीन आदि के पैकेट बांटे गए। विभाग की ओर से होली खेलने के लिए रंग व गुलाल की भी व्यवस्था की गई। सभी छात्र-छात्राओं ने जमकर एक दूसरे को रंग लगाया तथा पूरे हर्ष और उल्लास के साथ होली का पर्व मनाया ❑

कार्यशालाएँ आयोजित

'खासी लोक साहित्य' की सामग्री के प्रूफ संशोधन हेतु अंतिम कार्यशाला दिनांक 06.03.2025 से 08.03.2025 तक 'वासी लोक साहित्य' की सामग्री के प्रूफ संशोधन करने हेतु तृतीय एवं अंतिम कार्यशाला दिनांक 06.03.2025 से 08.03.2025 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान, (मुख्यालय) आगरा में विद्वानों/विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में डॉ. फिल्मिका मारबानियांग (संपादक), प्रो. दिनेश कुमार चौबे (विषय विशेषज्ञ), डॉ. सुनील के शी, विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, काजी नजरूल इस्लाम महाविद्यालय, चुरूलिया, आसनसोल, पश्चिम बंगाल (हिंदी संपादक) ने भाग लिया।

'निमाड़ी लोक साहित्य' की सामग्री का चयन, संकलन एवं अनुवाद करने हेतु प्रथम कार्यशाला दिनांक 26.03.2025 से 27.03.2025 तक आपके कार्य क्षेत्र शास्त्री कामर्स होम महेश्वर (मध्य प्रदेश) में विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई इस कार्यशाला में श्री विजय जोशी शितांशु (भाषा संपादक) श्री हरीश दुबे, साहित्यकार एवं गीतकार (मान्य प्रदेश) हिंदी संपादक, श्री जगदीश जोशीला, भाषाविद, श्रीमती मनीषा शास्त्री, माहेश्वर निमाड़ी लोकगीत गायिका श्रीमती रजनी उपाध्याय, खरगोन, निमाड़ी गीत गायिका, श्री हरिबल्लभ शास्त्री, विषय विशेषज्ञ, श्री मनमोहन जोशी, विषय-विशेषज्ञ ने भाग लिया।

'अवधी मुहावरा शब्दकोश' निर्माण संबंधी प्रथम कार्यशाला दिनांक 27.03.2025 से 31.03.2025 तक अपने कार्य क्षेत्र प्रयाग तीर्थन गेस्ट हाउस अरैल नैनी प्रयागराज में विषय विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई है। दस कार्यशाला में प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल (संयोजक), प्रो. नरेश मिश्र, रोहतक (सदस्य), प्रो. हरिशंकर मिश्र लखनऊ (सदस्य), डॉ. सुरुचि मिश्र, विलासपुर (सदस्य) ने भाग लिया। ❑

संपादकीय

भाषा, साहित्य से खुलेंगी विविध कौशल विकास की राहें

प्रिय पाठकों,

साहित्य में जितना सह भाव है, भाषा का मसला उतना ही टेढ़ा है। जो भाषा में गुणी हैं, समर्थ हैं, जो उसे बोलने की कला से भिज्ञ है, जिनमें उच्च भाषाई संस्कार हैं, जो उसके गौरव और गरिमा के प्रति प्रतिबद्ध और जागरूक हैं, जो अपनी वाणी से औरों को शीतल करते हुए नाप-तोल के बोलते हैं, वे अधिक संप्रेषणीय हैं, उनकी बोली को समझने के लिए किसी वृहद-विकट व्याकरण की जरूरत नहीं पड़ती है। भाषाविदो का मानना है की भाषा के संस्कार एक दिन में नहीं उपजते, उन्हें बोना पड़ता है, फिर निराई-गुड़ाई करनी पड़ती है, समय-समय पर आवश्यक खाद-पानी देना होता है, तब कहीं जाकर उसमें निखार आता है। करत-करत अभ्यास से यह कौशल प्राप्त होता है। इसीलिए कहा जाता है कि जिसके पास भाषाई कौशल का अनमोल खजाना होता है, वह बिना भौतिक धन-दौलत के ही कुबेर होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषाई कौशल विकास को एक छात्र की व्यक्तिगत सफलता के लिए महत्वपूर्ण घटक माना गया है, जिससे उसे समग्र विकास, रोजगार अनुकूलनशीलता, आत्मविश्वास के साथ-साथ प्रतिस्पर्धी दुनिया में पनपने का मौका मिलता है। नीति में भाषा और साहित्य के माध्यम से बच्चों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान जैसे कौशल विकसित करने के साथ ही मातृभाषा, बहुभाषिकता और त्रिभाषा सूत्र को आगे बढ़ाने की बात है। केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा अपने स्थापना काल से ही भाषा विज्ञान और भाषा शिक्षण के लिए समर्पित संस्थान है। भाषा शिक्षण को लेकर संस्थान की पहचान केवल भारत में ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर है। नई शिक्षा नीति के आलोक में संस्थान भाषा साहित्य के जरिए कौशल विकास के विषय को गंभीरता से लेते हुए सार्थक पहल कर रहा है। संस्थान के नेतृत्व में पिछले एक वर्ष में दो दर्जन से अधिक राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियां कौशल विकास पर केंद्रित करके आयोजित की गई। अहमदाबाद केंद्र द्वारा महाराज सयाजीराव गायकवाड के विचारों के माध्यम से नेतृत्व कौशल विकास, क्षेत्रीय केंद्र हैदराबाद के नेतृत्व में साहित्य के माध्यम से मूलभूत कौशलों का विकास (दक्षिण भारत के साहित्य के विशेष संदर्भ में) आगरा मुख्यालय में अनुसंधान एवं पूर्वोत्तर सामग्री निर्माण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय भक्ति साहित्य के माध्यम से विविध कौशलों का विकास जिनमें श्रवण, वाचन, लेखन और अभिव्यक्ति आदि मूलभूत कौशलों पर, भारतीय भक्ति साहित्य के माध्यम से प्रबंधन कौशलों का विकास जिनमें समय प्रबंधन समुह प्रबंधन, समारोह प्रबंधन और तनाव प्रबंधन का विकास, भारतीय भक्ति साहित्य के माध्यम से भाषाई कौशलों का विकास जिनमें कथा-पटकथा लेखन, गीत-नवगीत लेखन, संगीत, नृत्य, चित्रकला, शिल्पकला कौशल, भाषांतरण, तत्काल भाषांतरण, भाषिक संप्रेषण कौशल तथा भारतीय भक्ति साहित्य के माध्यम से संवाद कौशल, संगठन कौशल, नेतृत्व विकास कौशल, प्रेरणा कौशल आदि का विकास किस तरह किया जा सकता है उस पर विद्वानों ने विस्तार से चिंतन किया। लघु बजटीय संगोष्ठियों के माध्यम से भी बड़ी मात्रा में संगोष्ठियों का आयोजन किया गया है। इसके साथ ही संस्थान ने इस विषय पर एक वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम, प्रत्येक कौशल पर स्वतंत्र पुस्तक निर्माण हेतु दीर्घ शोध परियोजना, मालवीय मिशन केंद्र के माध्यम से साहित्य और कौशल पर एक दो तथा चार सप्ताह के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का निर्माण कार्य भी कर रहा है।

संस्थान द्वारा आयोजित विविध संगोष्ठियों में साहित्यिक, धार्मिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक दृष्टि से भाषाई कौशल विकास के अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार करने, अनुकूल शिक्षण पद्धति विकसित करने के साथ-साथ अन्य पाठ्येतर गतिविधियों को केंद्र में रखा गया। भारतीय वांग्मय अनेक भाषाओं में अभिव्यक्त एक ही विचार है। देश का यह दुर्भाग्य है कि स्वतंत्रता प्राप्ति तक विदेशी प्रभाव के कारण अनेकता को ही बल मिलता रहा। आज़ादी के बाद वाम विचार का बोलबाला रहा। इसकी मूलवर्ती एकता का सम्यक अनुसंधान होना अभी बाकी है। इसके लिए निस्संग भाव से सत्य शोध पर दृष्टि केंद्रित करते हुए भारत के विभिन्न साहित्यों में विद्यमान समान तत्वों एवं प्रवृत्तियों का विधिवत अध्ययन सबसे बड़ी आवश्यकता है। हमारे भक्ति साहित्य में कौशल विकास के अनगिनत अवसर छिपे हैं। मराठी साहित्य और दर्शन के प्रतिभा रूपी उपवन के सर्वोत्तम पुष्प श्री ज्ञानदेव जी की भावार्थ दीपिका (ज्ञानेश्वरी) और अनुभवामृत नामक ग्रंथ गत 700 वर्षों से पवित्र ग्रंथ माने जाते रहे हैं। इन ग्रंथो में कौशल विकास के असंख्य बीज मंत्र हैं। मधुरा भक्ति का अध्येता यदि अपनी परिधि को केवल हिंदी या बंग्ला तक ही सीमित कर ले तो वह सत्य के शोध में असफल रहेगा। उसे अपनी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में प्रवाहित मधुरा भक्ति की धाराओं में भी अवगाहन करना होगा। सभी की भूमि मधुर रस से आप्लावित है। सूर का वात्सल्य-वर्णन हिंदी-काव्य में घटने वाली आकस्मिक या ऐकांतिक घटना नहीं थी; गुजराती कवि भालण ने अपने आख्यानों में, पंद्रहवीं शती के मलयालम कवि ने कृष्णगाथा में, असमिया कवि माधव देव ने अपने बड़गीतों में अत्यंत मनोयोगपूर्वक कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया है। भारतीय भाषाओं के रामायण और महाभारत काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन न जाने कितनी समस्याओं को अनायास ही सुलझाकर रख देता है। इस तुलनात्मक शोध-प्रणाली से अनेक लुप्त कड़ियाँ मिल जाएँगी, भारतीय चिंतन धारा एवं रागात्मक चेतना की अखंड एकता का उद्घाटन हो सकेगा। भारतीय भाषाओं के अंतरसंवाद की पहल हिंदी को करनी होगी। हिंदी सीमावर्ती क्षेत्र समानतया द्विभाषी हैं। वे हिंदी बोलते समझते हैं। उनकी द्विभाषिकता अंतरसंवाद में बड़ी भूमिका निभा सकती है। दो भाषाओं के मध्य साहित्यिक अध्ययन के लिए सबसे कारगर भूमिका अनुवाद की हो सकती है। दूसरी भाषाओं की अनूदित कृतियों से हिंदी समृद्ध होगी, कौशल विकास भी होगा। ऐसी आशा करते हुए अपने लेखनी को पूर्ण विराम देता हूँ।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी
निदेशक

हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम

नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के बी. एड. पाठ्यक्रम के 36 प्रशिक्षणार्थियों हेतु दिनांक 25.02.2025 से 07.03.2025 तक हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम संचालित किया गया। जिसका शुभारंभ प्रो. हरिशंकर, शैक्षिक समन्वयक, कें. हिं. संस्थान की अध्यक्षता में किया गया। पाठ्यक्रम संयोजक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता के संयोजन में कार्यक्रम में कुल 36 (महिला-29, पुरुष-07) प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

पाठ्यक्रम के दौरान प्रो. सपना गुप्ता ने भारतीय ज्ञान परंपरा, हिंदी भाषा, डॉ. अनामिका गुप्ता ने भाषा विज्ञान तथा उसके विविध पक्ष, डॉ. शिखा माहेश्वरी ने हिंदी भाषा शिक्षण, कौशल पाठ योजना, भाषा भाषा शिक्षण पर विस्तार से प्रकाश डाला कार्यक्रम में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, डॉ. मीनाक्षी दुबे, प्रो. उमापति दीक्षित एवं प्रो. हरिशंकर ने हिंदी विषय पर विशेष व्याख्यान दिए। समापन समारोह दिनांक 07.03.2025 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर ने की। इस कार्यक्रम में पाठ्यक्रम संयोजक एवं विभागाध्यक्ष, प्रो. सपना गुप्ता, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष, डॉ. मीनाक्षी दुबे, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग के विभागाध्यक्ष, डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी, गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद से आए व्याख्याता, प्रो. सोनल पटेल और सुश्री अवनि भट्ट उपस्थित रहीं। समापन समारोह में सर्वप्रथम मंचस्थ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनामिका गुप्ता द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा किया गया। राष्ट्रगान के साथ समापन समारोह संपन्न हुआ।

इस क्रम में नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा दिनांक 11.03.2025 से 28.03.2025 तक जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डाइट गेजिंग, सिक्किम के डी.एल.एड. पाठ्यक्रम के 50 प्रशिक्षणार्थियों हेतु हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम संचालित किया गया। पाठ्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 11.03.2025 को प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, कें.हिं. संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में किया गया। इस दौरान 02 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अभिमत अनुभव प्रेषित किया गया।

पाठ्यक्रम में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, सांध्यकालीन विभाग के विभागाध्यक्ष, प्रो. उमापति दीक्षित, शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. निरंजन सिंह द्वारा हिंदी भाषा परिमार्जन पर विशेष व्याख्यान दिए गए। डॉ. अनामिका गुप्ता तथा डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा हिंदी भाषा परिमार्जन की अन्य कक्षायें ली गईं।

प्रो. सपना गुप्ता द्वारा शैक्षिक अध्ययन, डॉ. अनामिका गुप्ता द्वारा हिंदी भाषा की संरचना और भाषा तुलना प्रविधि तथा भाषा विज्ञान, डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा अन्य भाषा हिंदी शिक्षण तथा हिंदी भाषा एवं साहित्य का परिचय, का अध्ययन कराया गया। प्रशिक्षणार्थियों ने अवकाश दिवसों में जयपुर, आगरा, मथुरा, वृंदावन, फतेहपुर सीकरी, नई दिल्ली के स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों का शैक्षिक संदर्शन किया। ❑

दिल्ली केंद्र

छात्रों ने खेली फूल और गुलाल से होली

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के दिल्ली केंद्र द्वारा दिनांक 13 मार्च को होली कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दिल्ली केंद्र की क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए होली के पौराणिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्त्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में विदेशी छात्रों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। कक्षा 300 की छात्रा तोशिको ओत्सुका ने एक ग़ज़ल, कक्षा 200 की छात्राओं सुनैना और दिया ने एक फिल्मी गीत तथा कक्षा 300 की छात्रा युयुकि सोएदा ने जापान में वसंत ऋतु के विशेष त्योहार की संस्मरणात्मक प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में भारत के विभिन्न प्रान्तों में मनाई जाने वाली होली के दृश्य तथा होली संबंधी लोकगीत विदेशी छात्रों के मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन हेतु प्रस्तुत किए गए। अंत में मिठाई ग्रहण कर केंद्र के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक सदस्यों तथा विदेशी छात्रों ने गुलाल तथा फूलों से परस्पर होली की शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। ❑

अहमदाबाद केंद्र

नेतृत्व कौशल विषयक दो-दिवसीय संगोष्ठी संपन्न

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अहमदाबाद केंद्र, उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं महाराजा सयाजीरावविश्वविद्यालय, बड़ौदा गुजरात के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 17-18 मार्च, 2025 को 'महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय का हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान और नेतृत्व कौशल' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में उद्घाटकीय वक्तव्य संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने दिया। कार्यक्रम के दौरान मंच पर राजमाता शुभांगिनी राजे गायकवाड़, कुलपति प्रो. धनेश भाई पटेल, हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. कल्पना गवली, संगोष्ठी संयोजक प्रो. दिपेंद्र सिंह जाडेजा, बीज वक्ता डॉ. बंशीधर शर्मा, अहमदाबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. सुनील कुमार आदि उपस्थित रहे। ❑

करत-करत अभ्यास के जड़मति होई सुजान: प्रो. कुळकर्णी

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा माचवरम, विजयवाड़ा में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, आंध्र प्रदेश के कॉलेज ऑफ प्रचारक विद्यालय (बी.एड.) के छात्राध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए दिनांक 01.03.1025 से दिनांक 12.03.2025 तक 14वाँ हिंदी भाषा संचेतना शिविर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह दि. 01.03.2025 को दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, माचवरम, विजयवाडा, आंध्र प्रदेश के सभागार में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णीने आभासी माध्यम से की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री के. पूर्णचंद्र राव, प्रथम उपाध्यक्ष, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, आंध्र एवं तेलंगाना, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. के. चारुलता, प्राचार्य, हिंदी प्रचारक प्रशिक्षण विद्यालय, विजयवाड़ा उपस्थित रहीं। इस कार्यक्रम में कुल 86 (महिला-63, पुरुष-23) प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

आभासी मंच से जुड़े निदेशक प्रो. कुळकर्णी ने अपने वक्तव्य में कहा कि- हिंदी कौशल को बढ़ाने की नितांत आवश्यकता है। हिंदीतर प्रांतों में ही इन कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। उन्होंने हिंदी सीखने के लिए प्रयास को आवश्यक बताते हुए कहा कि भिन्न-भिन्न प्रांतों की भाषा को आत्मसात करते हुए प्रादेशिक भाषाओं में अपनी पकड़ अधिक होने के कारण अशुद्धियाँ हो रही हैं। राष्ट्रीय स्तर पर इन्हें व्यक्त करने की आवश्यकता है। अपने प्रयास को कायम रखिए। प्रो. कुळकर्णी ने प्रेरणा लेकर संचेतना शिविरों में लड़ाई के लिए तत्पर होने का आह्वान किया और कहा कि जीतने वाला ही सिकंदर कहलाता है। जहाँ मार्गदर्शन चाहिए वहाँ हम देंगे। आप को संघर्ष करना होगा। उच्चारण, वाचन, वर्तनी को सुधारने की आवश्यकता है। प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाना है।

14वाँ हिंदी भाषा संचेतना शिविर

मुख्य अतिथि श्री पूर्ण चंद्र राव ने बताया कि वे 50 वर्षों से दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए हिंदी सिखा रहे हैं।

डॉ. के. चारुलता ने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि छात्र इस पाठ्यक्रम को सुनने व पढ़ने से अवश्य लाभान्वित होंगे।

प्रो. गंगाधर वानोडे ने कहा कि हिंदीतर भाषी विद्यार्थियों को हिंदी में बातचीत करते समय अपने उच्चारण पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

इस शिविर का समापन समारोह दिनांक 12.03.2025 को किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में बाल चिकित्सक, ग्लोबल हॉस्पिटल, विजयवाडा, आंध्र प्रदेश के डॉ. मोटूरि सुभाष चंद्र बोस, विशिष्ट अतिथि के रूप में हिंदी प्रचारक प्र. महाविद्यालय, विजयवाडा की प्राचार्या डॉ. के. चारुलता, स्नातकोत्तर विभाग, उच्च शिक्षा तथा शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, पी.जी. विभाग, द.भा.हिं. प्रचार सभा, विजयवाडा के आचार्य डॉ. पी. श्रीनिवास राव, पाठ्यक्रम संयोजक क्षेत्रीय निदेशक, प्रो. गंगाधर वानोडे उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम के पाठ्यक्रम प्रभारी एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. फत्ताराम नायक थे।

समापन समारोह के दौरान अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए प्रो. सुनील कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त की। यह अत्यंत सौभाग्य की बात थी कि केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक पद्मभूषण से सम्मानित डॉ. मोटूरि सत्यनारायण के भतीजे डॉ. मोटूरि सुभाष चंद्र बोस मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इस दौरान हिंदी प्रचारक प्रशिक्षण महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. के. चारुलता, द.भा.हिं.प्र.सभा. विजयवाड़ा के डॉ. पी. श्रीनिवास राव भी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. गंगाधर वानोडे, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र ने अपने वक्तव्य में विद्यार्थियों को लगातार पढ़ने, लिखने, बोलने का अभ्यास करने को कहा। संचेतना शिविर के सभी प्रतिभागियों को अतिथियों के द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कु. प्रियंका मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ। ❑

शिष्टाचार भेंट

हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे ने सह-आचार्य डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. एस. राधा तथा डॉ. मोटूरि सत्यनारायण जी के भतीजे डॉ. मोटूरि सुभाषचन्द्र बोस ने दिनांक 02.03.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संस्थापक पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण जी की जन्म स्थली आंध्र प्रदेश विजयवाडा के पास कृष्णा जिले में स्थित 'दोण्डपाडु' में उनके परिवारजनों से शिष्टाचार भेंट की। वहाँ पर मोटूरि सत्यनारायण जी के पैतृक निवास का भ्रमण किया।

पृष्ठ 1 का शेष...

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

संस्थान, आगरा, प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी, संगोष्ठी संयोजक प्रो. सपना गुप्ता, एवं सह-संयोजक डॉ. मीनाक्षी दुबे द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया।

उद्घाटन सत्र के अतिथियों का उत्तरीय एवं स्मृति चिह्न द्वारा स्वागत किया गया। तत्पश्चात, संगोष्ठी की सह-संयोजक डॉ. मीनाक्षी दुबे ने स्वागत वक्तव्य दिया। संगोष्ठी की संयोजक प्रो. सपना गुप्ता ने आधार-पत्र प्रस्तुत किया।

बीज वक्ता के रूप में प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय ने कहा कि, संवाद में कहना और सुनना भारतीय साहित्य के मूल में रहा है। उन्होंने नाटक और मंच के लिए संवादों को बहुत महत्वपूर्ण बताया और कहा कि केशव की संवाद योजना बेजोड़ है। उन्होंने तीन 'त' अर्थात ताजमहल, तानसेन, तुलसीदास की बात कही।

विशिष्ट अतिथि प्रो. दीपेन्द्र जाड़ेजा ने कहा कि, इस विषय पर बात करने के लिए संवाद कौशल मुझे महत्वपूर्ण लगता है। संवाद की बात की जाए तो संवाद नायक का मुख्य विषय होता है।

इस उद्घाटन सत्र में संगोष्ठी में संस्थान के सभी शैक्षणिक प्रशासनिक कार्मिक तथा विद्यार्थीगण आदि उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. शिखा माहेश्वरी तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनामिका गुप्ता ने किया।

प्रथम अकादमिक सत्र का उपविषय, 'भक्ति साहित्य और कौशलों का विकासः श्रवण, वाचन, लेखन, अभिव्यक्ति' रहा। जिसके सत्राध्यक्ष प्रो. रवीन्द्रनाथ मिश्र, पूर्व प्रोफेसर, शांतिनिकेतन रहे।

विशिष्ट वक्ता डॉ. रीतामणि वैश्य, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, ने भक्ति साहित्य के विविध रूपों और इसकी गूढ़ता पर चर्चा की।

प्रथम सत्र में, डॉ. विद्यासागर सिंह, डॉ. महेन्द्र जाधव, मुहम्मद इबादुर खान, डॉ. दीप्ति अग्रवाल, डॉ. शबनम कुमारी, मनु पाण्डेय, उत्कर्ष सिंह ने अपने शोध आलेख प्रस्तुत किए।

इसके बाद 'भक्ति साहित्य में प्रबंधन कौशलों का विकास' उपविषय पर द्वितीय सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. शशि मुदिराज, पूर्व प्रोफेसर, हैदराबाद विश्वविद्यालय ने की, जबकि विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. भारती गोरे, प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय उपस्थित रहीं। द्वितीय सत्र में सात विद्वानों ने अपने शोध आलेख प्रस्तुत किए। इसके बाद सांस्कृतिक संध्या के रूप में कथा वाचन एवं कीर्तन संध्या का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दूसरे दिन तृतीय अकादमिक सत्र उपविषय 'भक्ति साहित्य में भाषाई कौशलों का विकास गीत-संगीत, कथा-पटकथा, अनुवाद, संपादन-पाठ संपादन, भाषा संप्रेषण कौशल' रहा।

इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. तंकमणि अम्मा, पूर्व प्रोफेसर, हिंदी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम, केरल ने की।

इस सत्र के विशिष्ट वक्ता प्रो. दीपेन्द्र जाड़ेजा ने स्त्री विमर्श की परंपरा में मीराबाई की भूमिका को रेखांकित किया। इस सत्र में पाँच लोगो ने अपने शोध आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ अकादमिक सत्र 'भक्ति साहित्य में अन्य विविध कौशल : संवाद, संगठन, नेतृत्व, प्रेरणा कौशल' रहा। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. माधव हाडा, पूर्व प्रोफेसर, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान ने की।

विशिष्ट वक्ता के रूप में कें. हि.संस्थान के प्रो. उमापति दीक्षित, विभागाध्यक्ष, सांध्यकालीन विभाग ने कहा कि, कबीर ने संतों के माध्यम से समाज की विकृतियों को दूर करने की बात कही। इस सत्र में, डॉ. संतोष धोत्रे, डॉ. दत्तात्रय येडले, डॉ. मनु शर्मा, मनीषा रघुनाथ महाजन, प्रो. टेंग्से दिग्विजय एम., डॉ. सुभाष जाधव, देवेश कुमार वाजपेयी ने अपने शोध आलेख प्रस्तुत किए।

प्रश्नोत्तरी सत्र के बाद आयोजित समापन सत्र की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी ने की। इस सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. रवीन्द्र शुक्ल, अध्यक्ष, हिंदी साहित्य भारती एवं माननीय पूर्व शिक्षा मंत्री उत्तरप्रदेश, विशिष्ट अतिथि प्रो. नरेंद्र मिश्र, माननीय सदस्य, शासी परिषद, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा एवं प्रो. सुनील कुमार, निदेशक, आई.सी.सी.आर., नई दिल्ली रहे। समापन सत्र का विषय 'भारतीय भक्ति साहित्य के माध्यम से कौशल विकास' पर आधारित रहा।

अतिथियों का स्वागत उत्तरीय एवं स्मृति चिह्न द्वारा किया गया। समापन सत्र का संचालन डॉ. परमान सिंह ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिखा माहेश्वरी ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से किया गया। ❑

मैसूर केंद्र

‘भारतीय भाषाओं में अकादमिक अनुवाद की स्थिति एवं संभावनाएँ’

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के मैसूर केंद्र द्वारा 12 मार्च 2025 को ‘भारतीय भाषाओं में अकादमिक अनुवाद की स्थिति एवं संभावनाएँ’ विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकारके उच्चतर शिक्षा विभाग) के सहयोग से आयोजित की गई।

केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के माननीय उपाध्यक्ष, प्रो. सुरेंद्र दुबे के संरक्षण एवं प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, माननीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केंद्रीय हिंदी संस्थान, मैसूर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक एवं संगोष्ठी संयोजक डॉ. रणजीत भारती द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। उन्होंने संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डाला और भारतीय भाषाओं में अनुवाद की आवश्यकता एवं संभावनाओं पर चर्चा की। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. टी. आर. भट्ट, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदीविभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, कर्नाटक अपने वक्तव्य में कन्नड़, तुळु, कोंकणी और हिंदी में परस्पर अनुवाद करने एवं इन विषय में काम करने वाले वरिष्ठ विद्वानों के बारे में विचार साझा किए। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. उषारानीराव, कवयित्री और लेखिका, बेंगलूरु, कर्नाटक भारतीय भाषाओं के अनुवाद में आने वाली चुनौतियों और इसके महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उद्घाटन सत्र के अंतर्गत धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मोहनटी, सहायक अध्यापक, हिंदी विभाग, टेरेसिएन कॉलेज, मैसूर ने किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का विषय ‘अकादमिक अनुवाद की स्थिति एवं चुनौतियाँ’ था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. (डॉ.) आर. सेतुनाथ, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, केरल ने की। मुख्यवक्ता के रूप में डॉ. तारिक़ ख़ान, राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर ने अकादमिक अनुवाद की चुनौतियों पर विचार प्रस्तुत किए। दोपहर भोजन के बाद द्वितीय सत्र का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत कुल 11 प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. उषारानीराव, कवयित्री और लेखिका, बेंगलूरुने की। इसी सत्र के अंतर्गत 4 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन शोध-पत्र वाचन किया। इस संगोष्ठी में कुल 77 (ऑफलाइन 69 और ऑनलाइन 8) प्रतिभागियों ने सहभागिता की। संगोष्ठी के समापन सत्र में सभी शोध- प्रस्तुतकर्ताओं एवं सहभागियों को अतिथियों द्वारा प्रमाण-पत्र दिया गया। अंत में क्षेत्रीय निदेशक मैसूर केंद्र द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित सभी अतिथि विद्वानों एवं सहभागियों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया। संगोष्ठी के आयोजन में प्रशासनिक कर्मी श्री राघवेंद्र का विशेष सहयोग रहा इसके अलावा श्री लक्ष्मीनारायण, पद्मा, स्वामी, चेन्ने गोडा आदि उपस्थित रहे। ❑

हिंदी संचेतना शिविर

दिनांक 02.03.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, मैसूर केंद्र द्वारा टेरेसियन कॉलेज, मैसूर के स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों हेतु आयोजित 12 दिवसीय प्रथम हिंदी भाषा संचेतना शिविर का समापन हुआ। इस शिविर का आयोजन 18 फरवरी, 2025 से 02 मार्च 2025 किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की। कार्यक्रम का संयोजन मैसूर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. रणजीत भारती ने की। समारोह के स्वागत भाषण में क्षेत्रीय निदेशक ने कहा कि जहाँ मातृभाषा का संबंध आत्मा से होता है, वहीं अहिंदी प्रदेशों में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का संबंध रोजगार देने और लोगों से लोगों को जोड़ने का कार्य करती है। अतः मातृभाषा के आलावा द्वितीय भाषा हिंदी सीखना विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। कार्यक्रम का मुख्य केंद्र संचेतना शिविर के सहभागी छात्राओं द्वारा तैयार ‘मैसूर वैभव’ पत्रिका का विमोचन रहा। इस पत्रिका के द्वारा सहभागियों ने मैसूर जिले के दर्शनीय स्थन, जलवायु, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक समृद्धि को उजागर किया। समारोह के मुख्य अतिथि टेरेसियन कॉलेज के आई. क्यू. ए. सी. के समन्वयक श्री विवेक चार्ल्स ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए भविष्य में इस प्रकार के और भी कार्यक्रम के आयोजन साथ मिलकर करने को कहा। इस कार्यक्रम को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले टेरेसियन कॉलेज के शिक्षक डॉ. मोहन ने सभी प्रतिभागियों एवं आयोजकों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन प्रतिभागी विद्यार्थी नूर सादिया एवं अमीना बानू ने किया। इस कार्यक्रम में 79 छात्राओं ने सहभागिता की। अंत में धन्यवाद ज्ञापन केंद्र के शैक्षिक सदस्य डॉ. योगेंद्र मिश्र ने किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. पूर्णिमा, डॉ. योत्सना, श्री राघवेंद्र, श्री लक्ष्मीनारायन, श्रीमती पदमा, स्वामी आदि मौजूद थे। ❑

भुवनेश्वर केंद्र

अतिरिक्त सचिव ने किया निरीक्षण

दिनांक 28.03.2025 को अपराहन 5:45 बजे से 6:30 बजे तक श्री सुनील कुमार बनरवाल (अतिरिक्त सचिव, उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) ने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के भुवनेश्वर केंद्र का निरीक्षण किया। इस दौरान केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास व श्री सुनील कुमार बनरवाल के मध्य भुवनेश्वर केंद्र द्वारा आयोजित समस्त शैक्षिक गतिविधियों को लेकर चर्चा हुई। ❑

गुवाहाटी केंद्र

“राष्ट्रीय शिक्षा नीति: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ”

मुख्यालय की स्वीकृति से दिनांक 24.02.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं हिन्दी विभाग, परिमल मित्र स्मृति महाविद्यालय, मालबाजार, जलपाईगुड़ी के संयुक्त तत्वावधान में ‘‘राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ’’ विषय पर एक दिवसीय लघु बजटीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन परिमल मित्र स्मृति महाविद्यालय, मालबाजार में सफलतापूर्वक किया गया। इस संगोष्ठी में केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्रः गुवाहाटी के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. चन्द्रशेखर चैबे प्रतिनियुक्ति पर थे। संगोष्ठी का शुभारंभ विभाग की छात्राओं द्वारा गणेश वंदना एवं ‘अतिथि देवो भवः’ की संस्कृति का पालन करते हुए अतिथि वंदना (स्वागत नृत्य) के साथ हुआ। उद्घाटन कत्ता वरिष्ठ कवि व आलोचक प्रो. जितेन्द्र श्रीवास्तव, निदेशक, अंतर्राष्ट्रीय प्रभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्याल, नई दिल्ली, विषय प्रवर्तक वरिष्ठ आलोचक प्रो. अरुण होता, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, पश्चिम बंग राज्य विश्वविद्यालय, बारासात, मुख्य अतिथि वरिष्ठ आलोचक प्रो. अमरनाथ शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कलकता विश्वविद्यालय, विशिष्ट अतिथि प्रो. रंजीता चक्रवर्ती, निदेशक, आंतरिक गुणवता आश्वासन प्रकोष्ठ, उत्तर बंग विश्वविद्यालय, विशिष्ट अतिथि डॉ. दिनेश साहू, सिक्किम विश्वविद्यालय, विशिष्ठ अतिथि डॉ. गणेश रजक, टी. डी.बी. कॉलेज, रानीगंज, डॉ. कार्तिक चंद्र दे, प्राचार्य, परिमल मित्र स्मृति महाविद्यालय तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, गुवाहाटी केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. चन्द्रशेखर चैबे ने अपने कर-कमलों से दीप प्रज्ज्वलन कर संगोष्ठी का सुखद आगाज किया। इस लघु बजटीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सभी विद्वानों ने नई शिक्षा नीति के प्रारुप को स्पष्ट करते हुए नई शिक्षा नीति की चुनौतियों एवं संभावनाओं की चर्चा की तथा इसके विभिन्न पहलूओं पर विस्तार से प्रकाश डाला।

नई शिक्षा नीति-2020 के लागू होने से छात्र-छात्राओं को शिक्षा में अनेक प्रकार से लाभ प्राप्त होगें। सभी वक्ताओं ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निहित भारतीय ज्ञान परंपरा, राष्ट्रीयता की भावना एवं सांस्कृतिक बोध से छात्रों को अवगत कराया। एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के सभी सत्रों का कुशलतापूर्वक संचालन डॉ. सुलोचना दास, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, परिमल मित्र स्मृति महाविद्यालय, मालबाजार ने किया। ❑

'हिंदी और मराठी साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरसता' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी व अन्य विद्वानगण।

कोकला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,पारनेर, अहमदनगर, महाराष्ट्र द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्घाटक के रूप में बीजभाषण देते हुए निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विशेष व्याख्यान सत्र में सुप्रसिद्ध हिंदी कथा लेखिका नासिरा शर्मा, डॉ. श्रीनिवासन जी, डॉ. अनिता डगोरे, सुनील कुमार आदि के साथ निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

'भारतीय ज्ञान परंपरा : साहित्य, संस्कृति और राष्ट्र' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में उद्घाटक के रूप में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी। साथ में खड़े है डॉ. रविंद्र शुक्ल, (पूर्व शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश) प्रो. सत्यकेतु, प्रो. दिलीप मेहरा।

साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित साहित्य उत्सव 2025 में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सम्माननीय सदस्य डॉ. नरेंद्र पाठक के साथ निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी एवं डॉ. पुरूषोत्तम पाटील।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी व अन्य।

पृष्ठ 1 का शेष...

का इतिहास, डॉ. सी. कामेश्वरी ने संधि, समास, हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ, डॉ. राजीव कुमार ने भाषा शिक्षण, डॉ. संध्या दास ने साहित्य शिक्षण, डॉ. वी. वेंकटेश्वर राव ने प्रयोजनमूलक हिंदी तथा डॉ. अनुपमा ने कविता शिक्षण पर विशेष व्याख्यान दिया।

481वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

समापन समारोह के अवसर पर संस्थान की यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित पत्रिका 'समन्वय दक्षिण' जनवरी-मार्च, 2024 अंक का विमोचन मुख्य अतिथियों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 16 (महिला-03 पुरुष-13) प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस अवसर पर अध्यापक प्रतिभागी नरेंद्र कन्नाके, आशिष बोधे तथा कु. संगीता यादव ने प्रतिक्रिया व्यक्त की। देश भक्ति गीत तथा स्वरचित कविता नरेंद्र कन्नाके ने प्रस्तुत किया, नृत्य प्रीती सोयामव नवनीत शेंडे ने प्रस्तुत किया। मंचस्थ अतिथियों द्वारा हस्तलिखित लघु शोध पत्रिका "चंद्रपुर की धरोहर" का विमोचन किया गया तथा पर परीक्षण में प्रथम पुरस्कार नरेंद्र गुरुदास कन्नाके, द्वितीय पुरस्कार ज्ञानेश्वर माधवराव पिंपळे, तृतीय पुरस्कार कु. संगिता रामानंद यादव तथा प्रोत्साहन पुरस्कार गजानन निरंजन पुरी ने प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्री ज्ञानेश्वर माधवराव पिंपळे व धन्यवाद कु. संगीता यादव ने दिया। इस पाठ्यक्रम में तकनीकी सहयोग डॉ. संदीप कुमार तथा श्री सजग तिवारी ने दिया। ❑

रूसी दूतावास के कार्मिकों को तत्काल भाषांतरण पाठ्यक्रम का प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

अर्थांतर

'चुंधा' और 'अंधा'

विचार मन में 'कौंधता' (बिजली के समान क्षण भर के लिए चमकता) है और पदार्थ या स्थान अत्यधिक प्रकाश में 'चौंधता' (जगर-मगर करता हुआ प्रखरता के साथ चमकता) है। एक उदाहरण - 'उस समारोह में प्रकाश-व्यवस्था इतनी तगड़ी थी कि वहाँ की 'चौंध' (ज़बरदस्त चमक) या 'चकाचौंध' (चौंध-ही-चौंध) से मेरी आँखें 'चौंधिया' (या 'चुँधिया') गईं (प्रकाश की तीक्ष्णता के कारण वे स्थिरदृष्टि नहीं हो पाईं)।

'चुंधा' ('चुंदा' भी) विशेषण है, जिस का अर्थ 'छोटी आँखों वाला, क्षीण दृष्टिवाला' है। उदाहरण- 'मीनाक्षी ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से देखा कि वह चुंधा आदमी अपनी चुंधी आँखों से उसे ताक रहा है।' 'चुंधी आँखें' माने सिकुड़ी हुई पलकों वाली कुछ मुँदी हुई आँखें'। ऐसी आँखें प्राकृतिक रूप से, किसी बीमारी के कारण या गाल खूब मोटे हो जाने के कारण भी हो सकती हैं, और ज़रूरत पड़ने पर (जैसे उन्हें अधिक प्रकाश से बचाने के लिए) जानबूझ कर भी बनाई जा सकती हैं। चुंधे को दोनों आँखों से दीखता है (भले ही अपेक्षाकृत थोड़ा कम); काने को एक आँख से दीखता है; और अंधे को एक से भी नहीं दीखता।

'काना' का पहला संबंध प्राणियों से है, पर बैंगन भी काना हो सकता है (कीड़े द्वारा उस में किया गया छेद होने पर) और कौड़ी भी कानी हो सकती है (माला में पिरोने के लिए छेदी गई होने पर; लक्ष्यार्थ 'नगण्य वस्तु')।

'अंधा' का भी पहला संबंध प्राणियों से है, पर क़ानून भी अंधा होता है। कुछ लोग अक्ल के अंधे होते हैं और कुछ लोग प्रेम में अंधे होते हैं। आप सावन के अंधों को भी जानते हैं, जिन्हें हरा-ही-हरा दिखाई देता है। डॉक्टर पराक्रम ने बताया कि विभिन्न कोशों में 'चुंधा' का अर्थ धुंधला या कम नजर वाला जबकि 'अंधा' का अर्थ जो बिल्कुल ही देख नहीं सकता लिखा है।

प्रस्तुति : अनिल तिवारी

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:
THE KENDRIYA HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोट: 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।
2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationman-agerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name :
THE KENDRIYA HINDI SHIKHSANA MANDAL
UPI ID : thekhsmagra@sbi

हिंदी शिक्षण में भारतीय भाषाओं का योगदान

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के क्षेत्रीय केंद्र शिलांग द्वारा "हिंदी शिक्षण में भारतीय भाषाओं का योगदान (पूर्वोत्तर भारत के विशेष संदर्भ में)" विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। दिनांक 28 एवं मार्च 2025 को कुल 6 सत्र में आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी ने की। कार्यक्रम में बीज वक्तव्य पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. बृंदा बेज़ले खारबिरिंबई, विशिष्ट अतिथि के रूप में इफ्लू, शिलांग के निदेशक प्रो. मौसमी गुहा बनर्जी एवं सम्मानित अतिथि के रूप में संघ लोक सेवा आयोग में अवर सचिव श्री जे. पी. पाण्डेय तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के कुलसचिव श्री अंकुश औंधकर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्वलन से हुआ। तदोपरांत क्षेत्रीय केंद्र शिलांग के निदेशक एवं संगोष्ठी के संयोजक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय जी ने स्वागत वक्तव्य एवं विषय की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रो. बृंदा बेज़ले खारबिरिंबई ने भाषा के महत्व को प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में 'गारो लोक साहित्य' पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

श्री अंकुश औंधकर ने वैदिक शिक्षा से लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तक में भाषाओं के योगदान का उल्लेख किया। श्री जे. पी. पाण्डेय ने भारतीय भाषाओं की विविधता पर प्रकाश डाला एवं बच्चों को अनेक भाषाओं के शिक्षण पर बल दिया।

प्रो. मौसमी गुहा बनर्जी नेकहा कि भाषा संस्कृति का अभिन्न अंग है तथा यह संस्कृति का संस्कार करती है। भाषा संस्कृति को प्रकट करती है।

मालूम हो कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मेघालय के माननीय राज्यपाल को उपस्थित होना था किंतु स्वास्थ्य कारणों से वे शामिल नहीं हो सके। उनके प्रतिनिधि के रूप में मुख्य सचिव डॉ. ब्रह्मदेव राम तिवारी ने हिस्सा लिया। माननीय राज्यपाल ने अपने आडियों संदेश में संगोष्ठी की सफलता हेतु शुभकामनाएं प्रेषित की। माननीय राज्यपाल के प्रतिनिधि डॉ. तिवारी पूर्वोत्तर भारत को भाषाओं का पालना बताया। उन्होंने हिंदी की वैज्ञानिकता एवं मेघालय राज्य की भाषाओं में अंतर्संबंध तथा स्थानीय भाषाओं के प्रति अनुराग को व्यक्त किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी ने आरंभिक शिक्षा में मातृभाषा के महत्व को प्रकट किया। भारतीय भाषाओं में लोक साहित्य के महत्व को रखा तथा भाषा कोश के निर्माण पर भी श्रोताओं के ध्यान को आकर्षित किया।

कार्यक्रम के प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. शैलेन्द्र कुमार सिंह ने की। इस सत्र का विषय "बहुभाषिकता और हिंदी शिक्षण : पूर्वोत्तर भारत में व्यावहारिक दृष्टिकोण" था। वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. बबली चौधरी, डॉ. श्वेता द्विवेदी, डॉ. जीन डकार, असित कमल ने अपने विचार व्यक्त किए।

द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो माधवेंद्र प्रसाद पाण्डेय ने की। इस सत्र का विषय "पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी की स्थिति" था। स्रोत विद्वान डॉ. अरुण कुमार पाण्डेय, डॉ. फिल्मेका मरबानियांग ने विचार व्यक्त किए। शाम को एक सांस्कृतिक कार्यक्रम 'सांस्कृतिक संध्या' का आयोजन किया गया जिसमें कई प्रादेशिक संस्कृति सम्पन्न प्रस्तुति दी गई। सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम का समापन प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी के उत्साहवर्धक वक्तव्य से हुआ।

कार्यक्रम के दूसरे दिन तृतीय तकनीकी सत्र के अध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार चोबे थे। इस सत्र का विषय "पूर्वोत्तर भारत में हिंदी प्रचार और नीति निर्माण" था। सत्र में वक्ता डॉ. सुनील कुमार शॉ, डॉ. विजया सिंह, डॉ. चंद्रशेखर चौबे, डॉ. बृजेश शर्मा, सुश्री डालिंन टांग ने अपनी बातें रखी।

चतुर्थ तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. भरत प्रसाद त्रिपाठी ने की। इस सत्र का विषय "पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी शिक्षण की पद्धतियाँ और चुनौतियाँ" था। वक्ता डॉ. फाल्गुनी चक्रवर्ती, डॉ. साईनाथ चपले, डॉ. आलोक सिंह, डॉ. मयंक जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के अध्यक्ष प्रो. हितेंद्र कुमार मिश्र ने की। इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में पद्मश्री श्रीमती सिल्बी पासाह उपस्थित रहीं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे ऑनलाइन माध्यम से जुड़े थे। साथ ही, सम्मानित अतिथि के रूप में निफ्ट, शिलांग के निदेशक प्रो. शंकर कुमार झा उपस्थित थे। समापन सत्र में संगोष्ठी के संयोजक एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र शिलांग के निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में लगभग 300 प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा 50 से अधिक प्रतिभागी ऑनलाइन कार्यक्रम में जुड़े। ❑

183वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग द्वारा मेघालय राज्य के वेस्ट जयंतिया हिल्स जिला जोवाई के हिंदी शिक्षकों के लिए 183 वाँ हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम दिनांक 03.03.2025 से 15.03.2025 तक आर.एम.एस.ए. माध्यमिक विद्यालय, जोवाई, मेघालय में आयोजित किया गया है।

इस पाठ्यक्रम में वेस्ट जयंतिया हिल्स जिला जोवाईके विभिन्न विद्यालयों के 22 हिंदी शिक्षकों (11 महिलाएवं 11 पुरुष) ने प्रतिभागिता की।

183 वें नवीकरण पाठ्यक्रम के संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय थे तथा पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. मयंक, सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र थे।

नवीकरण पाठ्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 04 मार्च 2025 को शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए नवीकरण पाठ्यक्रम में दिए जाने वाले नवीन एवं तकनीकी ज्ञान तथा विविध विषयों की अध्यापन के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती एमेरेल्डा एस्थेर किनडियाह, प्रधानाचार्य आर. एम. एस. ए. माध्यमिक विद्यालय, जोवाई थीं। स्वागत एवं परिचय डॉ. मयंक द्वारा किया गया। संचालन श्री आकाश कुमार एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री पिंरीन्हीलांग रेम्माई द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. मयंक, अतिथि अध्यापक श्री आकाश कुमार, श्री पिंरीन्हीलांग रेम्माई, प्रतिभागी शिक्षकगण, आर.एम. एस.ए. माध्यमिक विद्यालय, जोवाई के शिक्षणगण और शिलांग केंद्र के कर्मचारी उपस्थित थे।

प्रशिक्षण के बाद पर-परीक्षण लिया गया। पर-परीक्षण में प्रथम स्थानश्रीमती सिलवरीन लिंडोह नोंगबेट, द्वितीय स्थान श्री महेश कुमार तथा तृतीय स्थान श्री तातार्ली पोथ्मी ने प्राप्त किया। ❑

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहयोग
अनिल तिवारी

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं। संस्थान समाचार का ई-मेल: sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।